Q:— Explain Maslow's Needs Hierarchy Theory or X-Y Theory or Mc.Clelland's Learned Need Theory.

Ans: (1) मास्लो का आवश्यकता क्रमबद्धता सिद्धान्त

अब्राहम मास्लो द्वारा मानव अभिप्रेरणा सिद्धान्त का प्रतिपादन 1943 ई० में किया गया है। व्यवसायिक संदर्भ में यह सिद्धान्त दो समस्याओं के समाधान का प्रयास करता है। पहली समस्या का संबंध लक्ष्य पसंदगी से है तथा दूसरी समस्या का संबंध लक्ष्य की खोज से है। ये दोनों समस्याएँ वस्तुतः मानव प्रेरणा (motivation) के दो पक्षों से संबंधित हैं। प्रेरणा का प्रभाव मानव व्यवहारों पर दो रूपों में पड़ता है—

(i) प्रेरणा (motivation) व्यक्ति को अनेक लक्ष्यों में से किसी एक लक्ष्य को अपनाने के लिए बाध्य करती है।

(ii) प्रेरणा व्यक्ति को कुछ ऐसे लक्ष्यों को ढूँढने के लिए बाध्य करती है जो वर्तमान में उपस्थित नहीं होते हैं।

आवश्यकता श्रृंखला सिद्धान्त के अनुसार मानव व्यवहारों पर जिन प्रेरकों का प्रभाव पड़ता है उन्हें निम्नलिखित पाँच श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) शारीरिक आवश्यकताएँ — यह व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकताएँ होती हैं। ~~कुछ~~ इन आवश्यकताओं की श्रेणी में भोजन, पानी, आक्सीजन, नींद आदि से संबंधित हैं। इन आवश्यकताओं में यौन संबंधी आवश्यकता को भी सम्मिलित किया जाता है। इसका प्रभाव मानव व्यवहारों पर गहरे रूप से पड़ता है।

(ii) सुरक्षा की आवश्यकता — आवश्यकताओं की इस श्रेणी में मैस्लो ने व्यक्ति के अस्तित्व की सुरक्षा से संबंधित आवश्यकताओं को रखा है। व्यक्ति इन्हीं आवश्यकताओं से प्रभावित होकर आंतरिक एवं बाह्य स्तरों पर अपनी सुरक्षा का प्रयास करता है।

(iii) सामाजिक आवश्यकताएँ —

Oxford

K. Nand M.A 4th Sem (9)

2

जब व्यक्ति की शारीरिक व सुरक्षात्मक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं तब सामाजिक आवश्यकताएं उत्प्रेरक का कार्य करती है। सामाजिक आवश्यकताओं में पद, मित्रता, सम्बन्ध आदि आते हैं। इसी कारण एक समान सोच तथा धारणा के व्यक्ति एक साथ रहकर एक भिन्न सम्पदा की रचना करते हैं। स्थिति में सामाजिक सामाजिक आवश्यकताएं श्रेष्ठ उत्प्रेरक का कार्य करती है।

(iv) सम्मान आवश्यकताएँ —— मनुष्य की उपरोक्त तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात सम्मान या स्वाभिमान संबंधी आवश्यकताएँ उत्पन्न होती है। इसके अन्तर्गत पद, प्रतिष्ठा, सम्मान आदि आते हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति से व्यक्ति का अहम् पूरा होता है, उपलब्धियों का ज्ञान होता है तथा समाज में एक सम्मानजनक स्थिति की इच्छा उसकी होती है और यही इच्छा एक अभिप्रेरक का काम करती है। यद्यपि सम्मान या स्वाभिमान एक आन्तरिक भावना है परन्तु यह बाहरी व्यक्तियों से अपने काम, पद आदि की मान्यता व उत्साहवर्धन चाहता है, तभी उसका स्वाभिमान सन्तुष्ट होता है। सम्मान की आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति में स्व-विश्वास, गरिमा व स्तर का द्योतक होता है।

(v) आत्म कार्यान्वयन —— उच्च स्तर की ये आवश्यकताएँ व्यक्ति की क्षमता, योग्यता तथा उपलब्धियों का ज्ञान कराने से संबंधित होती है। उपरोक्त चारों आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात ही यह सर्वोच्च स्तर की आत्म विकास की आवश्यकता मनुष्य को और अधिक नियमित से कार्य करने को अभिप्रेरित करती है। इस स्तर पर व्यक्ति चुनौती के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के लिए नए-नए दायित्व वहन को तत्पर हो जाता है जिससे व्यक्ति की सहनशीलता बढ़ती है तथा उसके आत्मविश्वास को बल मिलता है।

मैस्लो के अनुसार मानव व्यवहार पर उपरोक्त पाँच प्रकार की प्रेरणाओं का प्रभाव क्रमिक रूप